अम्बेडकर चेयर द्वारा आयोजित चतुर्थ दिवसीय कार्यशाला दिनांक 13–04–17 को

बी0एच0यू0 के समता भवन सम्बोधी सभागार में सामाजिक न्याय व सशक्तिकरण विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता प्रो0 विभा त्रिपाठी ने बताया कि माता–पिता बच्चे का भविष्य का निर्माण करते है। शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण करती है। सभी मनुष्य जन्म से समान है संविधान पहला दस्तावेज है जो सामाजिक न्याय की व्याख्या करता है। पीड़ित बस पीड़ित होता है जाति धर्म के आधार पर उसे न्याय व सहायता दिया जाना गलत है सभी समान है अतः जातीय संघर्ष नहीं होना चाहिए।

मुख्य अतिथि डॉ0 प्रवेश भारद्वाज ने कहा कि मानव और उसकी गतिविधियों को समझना आवश्यक है। बाबासाहेब ने अपनी किताब प्रबुद्ध स्तम्भ में सहनशीलता को एक आदर्श बताया है प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मो से जाना जाता है। जाति से नहीं महात्मा बुद्ध ने भी कहा है कि मनुष्य मनुष्य में कोई भेद नहीं है। सम्राट अशोक संसार की समस्त प्रजा मेरा पुत्र है। अतः विश्व शान्ति हमे शास्त्र बताता है। बाबा साहेब भी बोलने की स्वतन्त्रता व समानता व शान्ति के प्रतीक रहे हैं।

प्रो0 आर0 एन0 खारवार सभा के अध्यक्ष ने बताया कि अपने क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ बनो। संस्कृति के महत्व को समझते हुए अपने उपर विश्वास रखो सफलता प्राप्त होगी। वैज्ञानिक सोच से ही समान विकास सम्भव है न्याय सभी के साथ हो दलित को भी मंदिर में प्रवेश प्राप्त हो। तभी सामाजिक परिवर्तन की यात्रा को गति प्राप्त हो सकती है।

सभी को संकाय प्रमुख प्रो0 मंजीत चतुर्वेदी ने सामाजिक परिवर्तन की यात्रा को आगे बढ़ाते हुये समानता, सद्भाव की बात कही। संचालन डॉ0 स्वप्ना मीणा ने किया संगोष्ठी में प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 रीता सिंह, प्रो0 आनन्द प्रकाश सिंह, डॉ0 अवध किशोर पाण्डेय, डॉ0 अशोक सोनकर पंकज सिंह व शोध छात्र जयकान्त सिंह, विजय विवेक, सिम्पू सिंह, उपस्थित थे।

"समाज परिवर्तन की यात्रा"